सीएसआईआर-सीरी में वैज्ञानिकों के लिए
"अनुसंधान और शासन-विधि में नैतिकता" विषय पर लघु कार्यशाला

सीएसआईआर-सीरी, पिलानी में संस्थान की प्रकाशन, नैतिकता और वैज्ञानिक सतर्कता की स्थायी समिति (एसईसी) द्वारा वैज्ञानिकों के लिए 10 अगस्त 2021 को "अनुसंधान और शासन-विधि में नैतिकता (Ethics in Research and Governance)" विषय पर एक लघु कार्यशाला का आयोजन किया गया। सीएसआईआर-सीरी के पिलानी मुख्यालय सहित जयपुर और चेन्नई में स्थित केंद्रों से वैज्ञानिकों एवं तकनीकी सहकर्मियों ने कार्यशाला में प्रतिभागिता की। नियमित सहकर्मियों के अलावा जेआरएफ/एसआरएफ और छात्रों ने भी सक्रिय रूप से कार्यशाला में भाग लिया। कार्यशाला आयोजन का उद्देश्य सीएसआईआर प्रयोगशालाओं में उच्च नैतिक मानदंड स्थापित करने के संबंध में वैज्ञानिकों एवं अन्य कार्मिकों को अवगत कराना था। कार्यशाला की अध्यक्षता संस्थान के निदेशक डॉ पी सी पंचारिया ने की। ऑनलाइन आयोजित की गई कार्यशाला में प्रतिभागी एवं श्रोतागण एम एस टीम्स के माध्यम से उपस्थित हुए।

सर्वप्रथम **डॉ पी के खन्ना,** मुख्य वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, एस ई सी ने डॉ पी सी पंचारिया, निदेशक, सीएसआईआर-सीरी का स्वागत किया। अपने स्वागत उद्बोधन में डॉ खन्ना ने कार्यशाला के उद्देश्य एवं पृष्ठभूमि से अवगत कराया।

इसके बाद **डॉ. पी सी पंचरिया, निदेशक सीएसआईआर-सीरी**, ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कार्यशाला आयोजन के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए सीएसआईआर की सभी प्रयोगशालाओं में अनुसंधान में नैतिकता का पालन करने के महत्व पर बल दिया। उन्होंने सभी वैज्ञानिक एवं तकनीकी सहकर्मियों से अनुसंधान आचार संहिता (Ethical codes) का पालन करने और प्रयोगशालाओं में उच्च नैतिक मानकों को बनाए रखने का आह्वान किया। अपने संबोधन के अंत में उन्होंने आशा व्यक्त की कि यह कार्यशाला अपने उद्देश्यों में सफल रहेगी।

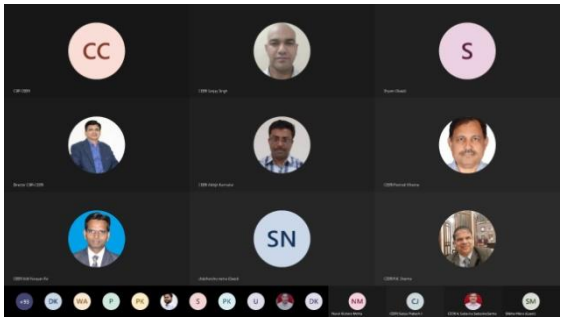

कार्यशाला के दौरान अध्यक्षीय संबोधन देते हुए
डॉ पी सी पंचारिया, निदेशक, सीएसआईआर-सीरी

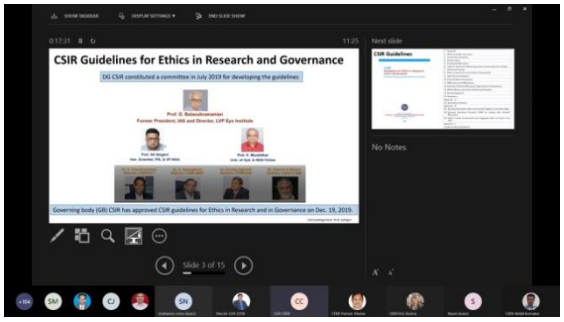

कार्यशाला में सीएसआईआर द्वारा निर्धारित
दिशानिर्देशों पर चर्चा की गई

तकनीकी सत्र

कार्यशाला के दौरान संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा तीन व्याख्यान/प्रस्तुीकरण दिए गए जिनका विवरण निम्नवत है :

1. एन ओवरव्यू ऑन द एथिक्स इन रिसर्च एंड गवर्नेन्स
- डॉ. निधि चतुर्वेदी, वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक

अपने व्याख्यान में डॉ चतुर्वेदी ने सीएसआईआर द्वारा जारी दिशानिर्देशों पर प्रकाश डालते हुए लैंगिक मुद्दों, वैज्ञानिक कदाचार से निपटने के लिए मानक संचालन प्रक्रियाओं, कदाचार के विभिन्न स्तरों पर विस्तृत जानकारी दी। अपने प्रस्तुतीकरण में उन्होंने ऐसे कदाचारों से निपटने के उपाय भी बताए।

2. कैटेगरीज़ ऑफ साइंटिफिक मिसकंडक्ट
– डॉ जय गोपाल पांडेय, प्रधान वैज्ञानिक

डॉ पांडेय ने अपने प्रस्तुतीकरण के माध्यम से विभिन्न प्रकार के वैज्ञानिक कदाचारों से अवगत कराया। अपने व्याख्यान में

उन्होंने विचारों के गबन से लेकर साहित्यिक चोरी, जालसाज़ी, बनावटीपन, धोखाधड़ी, नियामक दिशानिर्देशों का पालन न करने, अनुचित लेखकत्व, डेटा के वैधीकरण को प्रभावित करना और गलत बनाम फर्जी शोधपत्र आदि वैज्ञानिक कदाचारों पर प्रकाश डाला।

3. गुड साइंस प्रैक्टिसेज़

– डॉ अनिर्बान बेरा, वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक

अपने व्याख्यान में डॉ बेरा ने प्रयोगशाला अभिलेखों को सँभाल कर रखने की विधि और सुरक्षित प्रयोगशाला पद्धतियों के बारे में बताया। उन्होंने शोधात्र लेखन संबंधी विनियमों, परामर्श सेवाओं, सहयोगात्मक अध्ययनों और साहित्यिक चोरी से संबंधित महत्वपूर्ण विषयों पर विस्तार से जानकारी दी।

तकनीकी सत्र के उपरांत आयोजित **परिचर्चा सत्र** में कार्यशाला में उपस्थित वैज्ञानिकों एवं अन्य सहकर्मियों द्वारा पूछे गए प्रश्नों पर विस्तार से चर्चा की गई। एसईसी समिति के सदस्यों और तीनों वक्ताओं ने प्रतिभागियों की जिज्ञासा को शांत किया।

अंत में **डॉ. अभिजीत कर्माकर**, मुख्य वैज्ञानिक एवं नैतिकता अधिकारी ने अपने समापन भाषण में एससीपीसी समिति प्रकाशनों और संबंधित मामलों के लिए नए आंतरिक दिशानिर्देश तैयार कर रही है। उन्होंने बताया कि शीघ्र ही इस संबंध में नए दिशानिर्देश जारी किए जाएंगे।

कार्यशाला का समापन **धन्यवाद ज्ञापन** के साथ हुआ।

<u>कार्यशाला के कुछ चित्र</u>

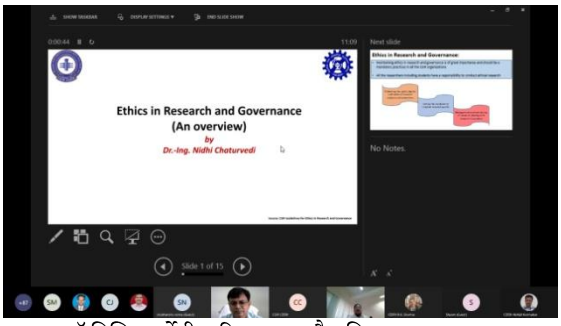

डॉ निधि चतुर्वेदी, वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक का व्याख्यान

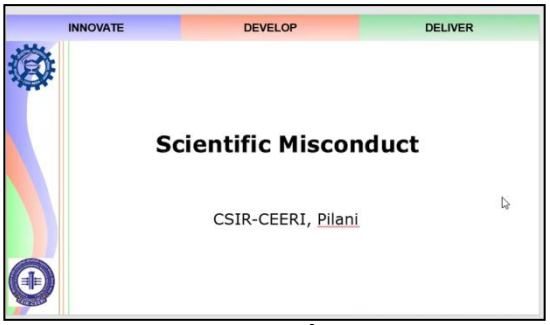

डॉ जयगोपाल पांडेय, प्रधान वैज्ञानिक का व्याख्यान

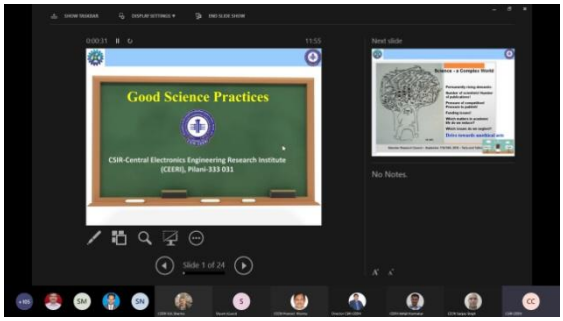

डॉ अनिर्वान बेरा, वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक का व्याख्यान

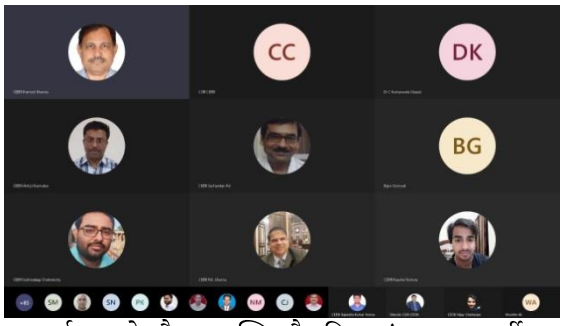

कार्यशाला के दौरान उपस्थित वैज्ञानिक एवं अन्य सहकर्मी